दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-II (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)–HL-**HL2**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Deekhush Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 2 / 23/07/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]: 1 1 3 0 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Deekhush

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये। 10 × 5 = 50

(क) सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य के महान कवि, भक्त और संत कबीरदास की 'गुरुदेव को अंग' नामक साखी संग्रह से ली गई है। इसमें कबीरदास जी ने सत्तगुरु की महिमा को बताया है।

व्याख्या - कबीरदास जी कहते कि जैसे ही गुरुदेव को समर्पण किया तो गुरुदेव की कमान/उपदेश से ज्ञान का तीर चलने लगा अर्थात ज्ञान रूपी चक्षु खुलने लगे। प्रेम या भक्ति के द्वारा जो तीर लगा उसने ~~सब~~ शरीर में भी भेद कर दिया।

विशेष -
① नाथ परंपरा व गुरुदेव को समर्पण झलकता है।
"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय"
यह द्वन्द्व पहले से ही था लेकिन यहाँ गुरु को समर्पण जिन्होंने गोविन्द की राह बताई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) ज्ञान मार्ग साधना-पद्धति से हटकर भक्ति मार्ग को अपनाते दिखाया है - प्रीति। 'पकरि टेक कबीर भक्ति की, काजी रहे झख मारि।'

(3) भाषा में मिश्रण किया गया है, खड़ी बोली, तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) निरखत अंक स्यामसुंदर के बार बार लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलि कै ह्वै गई स्याम स्याम की पाती।।
गोकुल बसत संग गिरिधर के कबहुँ बयारि लगी नहिं ताती।
तब की कथा कहा कहौं, ऊधो, जब हम बेनुनाद सुनि जाती।।
हरि के लाड़ गनति नहिं काहू निसिदिन सुदिन रासरसमाती।
प्राननाथ तुम कब धौं मिलोगे सूरदास प्रभु बालसँघाती।।

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ 'सूरदास' द्वारा कृत 'भ्रमरगीतसार' से उद्धृत है। सूरदास अपनी बिम्ब योजना के लिए विख्यात हैं। इन पंक्तियों में गोपियाँ-उद्धव संवाद के माध्यम से विरह-दशा का वर्णन किया गया है।

व्याख्या - जब उद्धव को मथुरा से गोकुल भेजा गया, तो जो पत्र कृष्ण ने लिखकर भिजवाया था उसके बार-बार छाती के लगाने से वह गल गया है। उसी पत्र में गोपियाँ विरह में रम जाती हैं। गोपियाँ उद्धव से प्रश्न करती हैं कि उस समय की सोचो जब हमारी विरह दशा अंदर ही अंदर गहरी होती जाती है।

श्रीकृष्ण के प्रेम ने उन्हें इतना पागल कर दिया कि वे अब हमेशा उनके बारे में सोचती हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और अन्त में प्रार्थना करती है कि हे प्राणनाथ! अब और नहीं सहा जाता, उन्हें दर्शन को अभिभूत है।

विशेष -

(1) विप्रलंभ श्रृंगार का अद्भुत वर्णन है जिसके लिए सूरदास प्रसिद्ध हैं।

(2) अलंकार में यमक अलंकार (स्याम-स्याम) का सुंदर प्रयोग हुआ है।

(3) दृश्य बिम्ब की उपस्थिति ने पाठकों को भावुकता में डुबो दिया।

(4) भाषा - लोक भाषा व ब्रज का मिश्रण है।

(5) गोपियों की छटपटाहट का सुंदर ~~प्रयोग~~ दृश्य विधान।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रोई गँवाए बारह मासा । सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरख बरख परि जाई । पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवै रूप मुरारी । जासौं पाव सोहाग सुनारी ।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा । कोनि सो घरी करै पिउ फेरा? ।।
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।
रकत न रहा, विरह तन गरा । रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जोरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु, नाथा ।।
बरस दिवस धनि रोई कै, हारि परी चित झंखि।
मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पंखि।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल द्वारा के प्रसिद्ध सूफी कवि 'मलिक मुहम्मद जायसी' द्वारा रचित 'पद्मावत' के नागमती विलाप खण्ड से ली गई है। इसमें रतनसेन के सिंहलद्वीप जाने पर नागमती की विरह दशा को 'बारहमासा' वर्णन के माध्यम से बताया गया है।

व्याख्या - रतनसेन, पद्मिनी रानी का बखान सुनकर उसे पाने सिंहलद्वीप चले जाते हैं, लेकिन उनके न लौटने की स्थिति में नागमती की हालत गंभीर हो चुकी है। वह बारह महीने रो-रोकर निकाल दिए हैं, हर साँस में एक ही दुख है। तिल-तिलकर जीवन निकल रहा है।
अगर पतिदेव ही नहीं लौटते तो सुहाग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की कल्पना करना व्यर्थ है। हर संध्या को रास्ता देखती हूँ कि किस समय प्रियवर का आगमन होगा और अंत में बताती हैं कि लोगों के घर-घर जाकर पूछती हूँ लेकिन अन्तत: निराशा ही हाथ लगती है।

विशेष - (1) अवधी भाषा में विरह-वेदना का मार्मिक वर्णन किया है।

(2) नागमती के आदर्शवादी चरित्र को उभारा है। 'बारहमासा' वर्णन के माध्यम से धैर्य, एकनिष्ठता को दिखाया गया है।

(3) ~~नागमति~~ नागमती की मनोवैज्ञानिक दशा का वर्णन।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) शत घूर्णावर्त, तरंग-भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ गजानन माधव मुक्तिबोध द्वारा रचित 'ब्रह्मराक्षस' कविता से ली गई हैं, इनमें कवि ने बाहरी व भीतरी अन्तर्द्वन्द्व को प्रस्तुत किया है।

व्याख्या- उसे आत्मचेतस से विश्वचेतस होने की प्रक्रिया में उनके बाधाएं, उतार-चढ़ाव आते हैं वह (ब्रह्मराक्षस) उस बावड़ी में से निकलने का प्रयास करता लेकिन छटपटाहट के ~~सिवाय~~ सिवाय कुछ नहीं मिल रहा। वह ~~उस~~ छाती फैलाकर उन सभी अन्तर्द्वन्द्वों से मुक्त होना चाहता है ~~लेकिन~~ और विजयी होने की इच्छा लेकर आगे बढ़ रहा है अर्थात् 'अतिरेकवादी पूर्णता' की कल्पना को हासिल करना चाहता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष -

① इन पंक्तियों में आत्मचेतना व विश्वचेतना के मध्य उभरे अन्तर्द्वन्द्व को दिखाया।

"पिस गया वह दो कठिन पाटों के बीच'
भीतरी औ बाहरी
ऐसी ट्रेजिडी है नीच।"

② यमक अलंकार का (राशि - राशि) का वर्णन किया गया है।

③ भाषा तत्सम प्रधान लेकिन लयात्मकता विद्यमान।

④ ब्रह्मराक्षस की 'अतिरेकवादी पूर्णता' की कपोल कल्पित भावना को दिखाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत अवतरण महाप्राण कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित लम्बी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से लीगई है।

व्याख्या - इन पंक्तियों में निराला ने शक्ति की कल्पना की है जिसको वह एक शिक्षिका के रूप में स्वीकारते हैं। उस शक्ति माँ देवी का भगवान राम की अनुचर बताते है पर सीता की मुक्ति न होने से वह केवल अंधेरे के रूप में ही रह गई।

विशेष -
① भाषा तत्सम प्रधान, व खड़ी बोली का मिश्रण।
② कविता-कामनी से कामनी व अंत में यामिनी होने की स्थिति को बताया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'कबीर का मूल व्यक्तित्व कुछ भी हो, उनके काव्य की श्रेष्ठता में कोई संदेह नहीं।' विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आलोचकों का एक वर्ग कबीर को "मूलतः संत, प्रकृति से उपदेशक व ठोंक-पीटकर कवि हो गए हैं।" मानते हैं तो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर को मूलतः भक्त व अन्य व्यक्तित्वों को उसी की परछाई मानते हैं।

कबीर का व्यक्तित्व बहुआयामी है. वे एक क्रांतिकारी समाज सुधारकों बी.आर. अम्बेडकर, महात्मा गाँधी, विवेकानन्द आदि की परंपरा में समाज-सुधारक के तौर पर गिने जाते हैं।

"सुखिया सब संसार है, खावै अरु सौवे,
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवे।"

इसके साथ ही मध्यकाल में व्याप्त विलासिता, जातिवाद, वर्ण-व्यवस्था, धार्मिक आडम्बरों के विरुद्ध भी खूब आवाज़ उठाई।

संत की भूमिका में भी कबीर ने अपना कर्तव्यपालन बखूबी किया. उन्होंने निर्गुण व सगुण विवाद पर लोगों की आँखें खोली।

और काव्यात्मक दृष्टि से कवि तो नहीं माने जाते (मसि कागद छुवौ नहीं, कलम गहि नहीं हाथ)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेकिन इतना जो काव्य है, वह कई मायनों में सचेत व सजग कवियों में ईर्ष्या पैदा करता है।

अगर काव्य के हिसाब से प्रतिमान सैट किए जाएं तो कबीर एक महान कवि भी हैं हालाँकि वे खुद को कवि नहीं मानते
"जिन बुम जान्यौ गीति है, वह है निज ब्रह्म बिचार।"

काव्य श्रेष्ठता के कारण -

① आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है क्योंकि उन्होंने भाषा का प्रयोग जनमानस की आँखे खोलने के लिए किया न कि अभिजात्य वर्ग के लिए।

② 'पंचमेल खिचड़ी' वाली भाषा न केवल भावनात्मक रहस्यवाद सारगर्भित है बल्कि कई अन्य दर्शनों का समावेश भी।
"तलफै बिनु बालम मोर जिया,
दिन चैन नहीं, रात नहीं निंदिया, तलफ-तलफ के भोर किया।"

③ अलंकार व बिंब (दृश्य व श्रव्य) का सुन्दर प्रयोग = "जो उगया सो आथव, फूलया सो कुम्हलाई।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) ब्रज भाषा को अपना कर संस्कृत-भाषा के कलेवर से मुक्ति -
" संस्किरत है कूप जल, भाखा बहता नीर।"

(5) इनके अलावा कबीर ने ~~हिम~~ निःस्वार्थ, आत्मविश्वास, अक्खड़ता व अभावकता के साथ साखियाँ बोली इनमें ~~सब~~ सामान्य आदमी की समस्याओं का वर्णन है, ~~व्यंग्यात्मक~~ व्यंग्यात्मक भाषा में उनका हर वर्ग के लोगों को दुत्कारना एक असीम छाप छोड़ता है।
" कांकर-पाथर जोरि के मसजिद लिया बनाएं।
ता चढ़ मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय॥"
व " पाहन पूजै हरि मिलै तो मैं पूजूं पहार।
तातें तो चाकी भली, जो पिस खाय संसार॥"

कबीर के भाषा में नाथ परंपरा से लेकर मध्यकालीन ब्रज भाषा सबका मिश्रण दिखाई देता है।

अतः स्पष्ट है कि हालांकि कबीर का मूल व्यक्तित्व कवि न होकर, भक्त होने के साथ-साथ समाज-सुधारक व संत है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

एलिन * इनकी दूरदृष्टि, बिम्बात्मकता व व्यंग्यपूर्ण कथनों के माध्यम से जो औपनिवेशिक भारतीय पराधीन जनमानस पर थोड़ी वह आज भी स्वाधीन जनमानस पर भी बनी हुई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) वक्रता और वाग्विदग्धता के धरातल पर भ्रमरगीतसार का आधार लेते हुए कवि सूरदास का मूल्यांकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वक्रता का अर्थ कथन को टेढ़े-मेढ़े ढंग से कहना ताकि बात की गहराई तक पहुँचा जा सके। वाग्विदग्धता का अर्थ है वचनों में वैविध्यपूर्ण कथन जो कि पाठक या सामने वाले सापेक्ष रूप से नहीं बल्कि निरपेक्ष रूप से प्रहार करें।

अत: व्यंग्यपूर्ण कथनों के माध्यम से, प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत की जाने वाली बात को वक्रतापूर्ण व वाग्विदग्धतापूर्ण धरातल माना जा सकता है।

सूरदास द्वारा रचित भ्रमरगीतसार में न केवल उद्धव ने बल्कि गोपियों ने भी वक्रोक्तिपूर्ण कथनों का प्रयोग किया जिसके माध्यम से पाठक के मन प्रतिद्वन्द्व होने का भाव उभरता है।

वह मथुरा काजर की कोठरी जे आवहिं ते कारे।
तुम कारे सुफलक सुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
(शहरों पर व्यंग्य)

"ऊधौ, मन न भए दस-बीस,
एक हुतौ सो गयो श्याम संग, अब को अवराधे ईश।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"लोचन जल कागद मसि मिलि कै है गई स्याम साम की पाती," (अंतरिक वेदना)

इन कथनों के माध्यम से गोपियों ने उद्धव पर भंवरे के माध्यम से चोट की है,

"अब निकसति नाहीं स्याम जो उर में तिरछे है अड़े"

अतः सूरदास ने गोपियों के माध्यम से न केवल प्रतीकात्मक रूप में बल्कि उद्धव व उनके संदेशों को सीख भी दी है। कभी-कभी गोपियाँ सीधे उद्धव से कहती है कि कहना तुम्हारे कृष्ण को " ब्याह लाख धरी दस कुबरी अन्तत : कान्ह हमारे।"

" अतिमलगात भई है तुम बिन बहुत दुखारी गाय।

विरह व विप्रलंभ शृंगार का जितना वक्रतापूर्ण प्रस्तुतीकरण सूरदास ने किया है वह आश्चर्यजनक बात है क्योंकि सूरदास जन्म से अंधे माने जाते हैं।

आचार्य शुक्ल ने भी सूरदास के व्यंग्यपूर्ण कथनों की प्रशंसा की है और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तो कहा है कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'सूर, सूर नहते और यशोदा हो गये।

अतः इनकी बिम्बात्मकता व व्यंग्यपूर्ण कथनों के माध्यम से भ्रमरगीतसार वक्रोक्ति व वाग्विदग्धता के धरातल पर खरा उतरता है, हालाँकि इसमें कुछ सीमाएँ भी है जैसे उद्धव-गोपियों संवाद में निर्गुण-सगुण विवाद में सीधे बात-चीत हुई लेकिन यदि इन सबको एक तरफ कर दिया जाये तो सूरदास एक अप्रतिम सोचने वाले और आंतरिक मन को जानने वाले कवि हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) आपके मत से कबीर और तुलसी में किसे 'लोकनायक' की संज्ञा देना अधिक उचित होगा? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'लोकनायक' उसे कहा जाता है जो आम जनता का प्रतिनिधित्व करें, उनके अंतर्मन को समझे और उनकी वेदनाओं को मिटाने का प्रयास करें।

भक्तिकालीन काव्यधारा में कबीर व तुलसीदास ने आमजनता पर अमीम छाप छोड़ी जो आज तक भारतीय ही नहीं, विदेशी जनमानस पर तक पहुँच रही है। दोनों का सन्दर्भगत विश्लेषण दोनों को लोकनायक कहलाता है लेकिन किसी एक का चयन करना हो तो मैं कबीरदास को लोकनायक के संज्ञा देना चाहूँगा क्योंकि -

① कबीर ने निःस्वार्थ, आत्मविश्वास के साथ सामाजिक कुरीतियों का खण्डन किया, वे बी.आर. अम्बेडकर, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी आदि क्रांतिकारी समाज सुधारकों की परंपरा में शामिल किए जाते हैं —

"सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै॥"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विलासिता, नारी को भोग की वस्तु समझना, जातिवाद, वर्ण व्यवस्था व धार्मिक आडंबरों पर कबीर ने चोट की जिससे जनमानस में एक नयी ऊर्जा का सँचार हुआ।

"साईं के सब जीव भये, किरी कुंजर दोऊ" (जातिवाद पर चोट)

"मुंड मुड़ाए हरि मिलें, तो सब लें मुंडाए।"
~~भेड़ नें मुंड़ाए~~

"पाहन पूजे हरि मिलें तो मैं पूजूँ पहाड़।
ताते तो चाकी भली पिस खाए संसार।।" (धार्मिक आडंबरो पर चोट)

तुलसीदास ने भी दास्य भाव से रामचरितमानस में लघुमानववाद का उदाहरण प्रस्तुत किया लेकिन ऐसा आत्मविश्वास दिखने को नहीं मिलता। उनके यहाँ तो 'शंभुक' प्रसंग को हटा दिया तथा
"ढोल गँवार शुद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी।"
के माध्यम से ऊँच-नीच व नारी की पराधीनता का विषय बनाया है।

कबीर ने जिस भाषा का प्रयोग किया वह जनमानस में रम गई हालाँकि संस्कृतनिष्ठ अवधी में रचित रामचरितमानस का पठन-पाठन होता है लेकिन वह सामाजिक उत्थान के स्थान पर धार्मिक ग्रंथ बन कर रह गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कबीर ने निर्गुण - सगुण विवाद के माध्यम से लोगों को भक्तिमार्ग का परिचय दिया।

जबकि तुलसीदास ने निर्गुण व सगुण में समन्वय चेतना का मार्ग अपनाया -

"अगुनहिं - सगुनहिं नहिं कछु भेदा, अगुनहिं - सगुनहिं वेद बखाना।"

आत्मविश्वास से भरे कबीर मुराड़ा हाथ लेकर क्रांति कर देना चाहते हैं।

कबिरा घर जारौ आपना, लिया मुराड़ा हाथ,
अब घर जारौं तासु का, जो चलै हमारे साथ।

अतः दृढ़-निश्चय की प्रतिज्ञा, बदलाव की प्रबल भावना को प्रस्तुत करते हैं।

तुलसीदास भी रामराज्य की स्थापना करना चाहते हैं लेकिन बदलाव करने वाले लोगों पर कम ध्यान जाता है।

अतः कुछ बिंदुओं पर कबीर लोकनायकत्व के रूप में तो कुछ में तुलसीदास। लेकिन समग्र रूप से देखा जाये तो कबीरदास का पलड़ा भारी दिखाई देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। इस रूप में यह प्रतीक आज भी उतना ही प्रासंगिक है।' क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपना अभिमत सोदाहरण स्पष्ट करें। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) लेकिन जैसे ही ख़बर शहर में पहुँची, वहाँ से मंत्रियों, नेताओं और अख़बारनवीसों की गाड़ियों का ताँता लग गया। आग से उठने वाले धुएँ के बादल तो एक ही दिन में छँट गए, पर शहरी गाड़ियों से उठनेवाली धूल के बादल कई दिन तक मँडराते रहे। नेताओं ने गीली आँखों और रुँधे हुए गले से क्षोभ प्रकट किया और बड़े-बड़े आश्वासन दिए। अख़बारनवीस आए तो दनादन उस राख के ढेर की ही फोटो खींचकर ले गए। दूसरे दिन अख़बार में छापकर घर-घर पहुँचा भी दिया–इस घटना का सचित्र ब्यौरा। किसी ने सवेरे खुमारी में अँगड़ाई लेते हुए, तो किसी ने चाय की चुस्की के साथ पढ़ा, देखा। देखते ही चेहरे पर विषाद की गहरी छाया पुत गई। चाय का घूँट भी कड़वा हो गया शायद। ढेर सारी सहानुभूति और दुख में लिपटकर निकला–'ओह, हॉरिबल...सिम्पली इनह्यूमन! कब तक यह सब और चलता रहेगा? तृ...तृ...तृ!' और पन्ना पलट गया। थोड़ी देर बाद गाँववालों की ज़िंदगियों की तरह ही अख़बार भी रद्दी के ढेर में जा पड़ा।

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत गद्यावतरण राजनीतिक उपन्यास की प्रतिष्ठित लेखिका 'मन्नू भंडारी' द्वारा 1979 ई. में लिखित 'महाभोज' उपन्यास से ली गई है। इसमें नौ हरिजनों को जिंदा जलाने के बाद गाँव के माहौल को दर्शाया है।

व्याख्या - नौ हरिजनों को जिंदा जलाने की घटना ने पूरे राज्य व देश को भौचक्का कर दिया। सांत्वना देने के लिए कई नेतागण आये, अखबारवालों ने घटना का जैसा का जैसा वर्णन लोगों तक पहुंचायाँ। शहरों में मध्यवर्ग बुद्धिजीवी लोगों ने क्षणिक सेकण्ड के लिए शोक जताया और वापस वही दिनचर्या।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन पंक्तियों में राजनीतिक लोगों का वोट बैंक बढ़ाने ~~के~~ के उद्देश्य से भ्रष्टाचार व ढोंग आडम्बरों को उजागर/दिखाना व नौकरशाही की निष्क्रियता पर व्यंग्य किया है।

सब सांत्वना व शोक व्यक्त करना चाहते हैं लेकिन उन्हें न्याय दिलाना कोई नहीं यहाँ तक कि राजनीतिक लोग तो अभी आश्वासन देकर अगले चुनाव में वोटों की उम्मीद कर रहे हैं।

विशेष:

(1) राजनीतिक विद्रूपता व नौकरशाही निष्क्रियता का मार्मिक ध्वनि।

(2) भाषा खड़ी बोली के साथ अंग्रेजी का प्रयोग - हॉरिबल ... सिम्पली इनह्यूमन !

(3) सूत्र शैली का प्रयोग के कारण संवाद चुस्त, छोटे व संप्रेषणीय।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी साहित्य के महान आलोचक व निबन्धकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित निबन्ध 'कविता क्या है' से लिया गया है। इसमें कविता की महत्ता पर शुक्लजी की व्याख्या को बताया है।

व्याख्या: कविता का उद्देश्य व महत्व इस बात में है कि वह संबंध निर्वाह का कार्य करती है, बुद्धिवाद को भावनात्मक अभिव्यक्ति दे तो, बाहरी जगत को आंतरिक जगत से तथा प्रकाश का अंधकार से संबंध बनाती है।

तात्पर्य है कि कविता व्यक्ति को सही मार्ग दिखाने व अभिव्यक्ति के माध्यम से अपने आंतरिक मन को खोलने का रास्ता बताती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :-

(1) तत्सम प्रधान खड़ी बोली।

(2) कविता की महत्ता का प्रतिपादन जैसे कि कालिदास (मातृगुप्त) व देवसेना द्वारा स्कंदगुप्त में बताया गया है।

(3) संबंध निर्वाह उद्देश्य।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारते बनायीं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गये हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय-योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मज़दूरों की हाज़िरी भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नर्क में कई इमारतें तान दी हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत गद्यावतरण राजेन्द्र यादव द्वारा संकलित 'कहानी संग्रह एक दुनिया समानांतर' की 'भोलाराम के जीव' से ली गई है। जिसमें भोलाराम की पेंशन न मिलने का कारण दिखाया है। इसके रचनाकार हरिशंकर परसाई हैं।

व्याख्या - इसमें भोलाराम में शासनव्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार को दिखाता है कि कैसे इंजीनियर, ठेकेदार, रद्दी इमारतें बनाकर लोगों का पैसा हड़प रहे हैं और मजदूरों का हक का पैसा चुराया जा रहा है।

विशेष:

① नर्क की कल्पना में वर्तमान के रंग।

② संवाद लम्बा किन्तु चित्रात्मकता के सटीक प्रयोग के कारण पठन-पाठन में कोई समस्या नहीं।

③ भ्रष्टाचार का चित्रण।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) देखो विद्या का सूर्य पश्चिम से उदय हुआ चला आता है। अब सोने का समय नहीं है। अँगरेज का राज्य पाकर भी न जगे तो कब जागोगे। मूर्खों के प्रचंड शासन के दिन गए, अब राजा ने प्रजा स्वत्व पहिचाना। विद्या की चरचा फैल चली, सबको सब कुछ कहने-सुनने का अधिकार मिला, देश-विदेश से नई-नई विद्या और कारीगरी आई। तुमको उस पर भी वही सीधी बातें, भाँग के गोले, ग्रामगीत, वही बाल्यविवाह, भूत-प्रेत की पूजा, जन्मपत्री की विधि! वही थोड़े में संतोष, गप हाँकने में प्रीति और सत्यानाशी चालें! हाय अब भी भारत की यह दुर्दशा!

संदर्भ/प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा कृत 'भारत-दुर्दशा' नाटक के अंतिम अंक से ली गई है जिनमें भारत भाग्य (उपनायक) बेहोश भारत (नायक) को जगाने का विफल प्रयास कर रहा है। इसकी रचना 1875 ई. में की गई।

व्याख्या - भारत-दुर्दशा के कारणों को बताने के बाद व दुर्दशित भारत की दुखमयी स्थिति को सुधारने का उपाय भारतेन्दु ने भारतभाग्य के माध्यम से बताया है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्रों में अंग्रेजों की प्रशंसा की व मुसलमानी शासन के पराधीनता दिन खत्म होने की बात कही।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, नये यंत्र व कौशल से भारत दुर्दशा को सुधारने का पूर्वानुमान(?) भारतभाग्य द्वारा किया गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष

(1) आशावादी विचार, सामाजिक बुराईयों के विनाश व नयी ऊर्जा के साथ जागने की आशा।

(2) गद्य में खड़ी बोली की प्रधानता को दर्शाया है।

(3) विरामचिन्हों का सुन्दर व सटीक प्रयोग।

(4) प्रासंगिकता आज भी वैसी है, हम सबको मिलकर, प्राप्त अवसरों का सदुपयोग कर भारत को श्रेष्ठ देश व नैतिक मूल्यों से युक्त देश बनाने की ओर अग्रसर होना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) 'दर्शन में प्रसाद की गहरी अभिरुचि थी जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में घुला दिया है।' स्कंदगुप्त के संदर्भ में विचार कीजिये। 20

जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व दर्शन की गहराई को जानता है, शिक्षित व पश्चिमी सिद्धांतों के ज्ञाता होने के कारण प्रसाद को दर्शन में गहरी अभिरुचि थी।

उनके साहित्यलेखन चाहे कविता हो, या नाटक उनका दर्शन प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्ष रूप से झलकता ही है। हालाँकि उनका प्रयास रहा है कि दर्शन थोपा हुआ न लगे इसलिए रचनाओं में घुला दिया है।

कुछ कविताओं (जैसे 'कामायनी' में उनका दर्शन 'प्रत्यभिज्ञा' या 'आनन्दवाद' साफ झलकता है " समरस थे जड़ या चेतन, सुन्दर साकार बना था, इच्छा-क्रिया ज्ञान मिल गये थे, आनन्द अखण्ड घना था।" तो स्कंदगुप्त में वह परोक्ष रूप से दिखाई पड़ता है जब देवसेना कहती है 'क्षणिक सुखों का अंत है, ऐसा सुख जिसका अन्त न हो,' इसलिए सुखाकांक्षी होना दुखी होना जबकि आनन्द इससे ऊपर।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रसाद शैवाद्वैतवाद के 'आनन्दवाद' से प्रभावित हैं और रचना के फलागम में शांत रस की निष्पत्ति की कामना करते हैं। इसलिए उनकी कृतियाँ न तो दुखांत और न ही सुखांत बल्कि 'प्रसादांत' पर समाप्त होती हैं।

स्कंदगुप्त नाटक में ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से, खासकर 'स्कंदगुप्त' व 'देवसेना' के माध्यम से आनन्दवाद दर्शन की पुष्टि हुई है। जो स्थिति कामायनी में 'मनु' की है वही स्कंदगुप्त की और जो 'श्रद्धा' की है वही देवसेना की।

स्कंदगुप्त के इच्छा, ज्ञान और क्रिया में संतुलन नहीं दिखता क्योंकि जब जिम्मेदारियों का समय आता है वह दूर भागता जान पड़ता है "अधिकार सुख उतना मादक है --- मैं केवल सैनिक होना चाहता।" और जब इससे गुजरकर राज्याभिषेक कर लेता है किन्तु देवसेना के प्रति आसक्ति का भाव उसकी इच्छा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के असंतुलन को दिखाता है।

~~स्कंदगुप्त~~ ने अपना साम्राज्य पुरगुप्त को सौंप दिया लेकिन अभी भी वह "देवसेना मैं तुम्हारे साथ अकेला वन में जीवन बिताना चाहता हूँ" की कल्पना रखता है।

~~देवसेना~~ सामाजिक कर्तव्यों में निहित व राष्ट्रभक्ति के खातिर सर्वस्व न्यौछावर करने वाली स्त्री है।

"मालव को पाना ही नहीं उसे श्रेष्ठ भी बनाना है"

"मेरी आसक्ति तुम्हें अधिकार बोध से अकर्मण्य बना देगी" तथा अंत में

"सभी क्षणिक सुखों का अंत है। ऐसा सुख जिसका अन्त न हो इसलिए सुख करना ही नहीं चाहिए। हे मेरे जीवन के देवता व उस जीवन के प्राप्य! क्षमा!"

के द्वारा प्रसाद ने 'आनन्दवाद' को प्रतिपादित किया है।

अतः स्पष्ट है कि 'बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि व पागलों की सी संपूर्ण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विस्मृति' की इच्छा रखने वाले स्कंदगुप्त के अंत में इच्छा, ज्ञान व क्रिया के असंतुलन से उत्पन्न द्वन्द्व को देवसेना के 'आनन्दवाद' या प्रत्यभिज्ञा दर्शन के माध्यम से सुलझाया है। जो प्रसाद की रचनाओं में घुला हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति में 'स्कंदगुप्त' नाटक कहाँ तक सफल हुआ है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्कंदगुप्त नाटक 1928ई. में लिखा गया जब कांग्रेस में 'पूर्ण स्वाधीनता' की लड़ाई आगे शुरू हुई। प्रसाद के नाटक सोद्देश्य लिखे गए और इस नाटक का उद्देश्य स्कंदगुप्त के ऐतिहासिक समाज में राष्ट्रीय चेतना की स्थापना करना था ताकि एक नयी आजादी के लिए के लोग में संघर्षरत हो।

राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख लक्षणों में से प्रसाद ने आंतरिक कलह के कारण उत्पन्न समस्या को बताया है जिसकी वजह से राष्ट्र की स्वाधीनता में बाधा उत्पन्न हुई।

इसके साथ ही प्रतिनिधित्व वर्ग के लोगों में राष्ट्रीयता का भाव न होना उनका उद्देश्य रहा है जैसा कि स्कंदगुप्त आदि पात्रों के माध्यम से।

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही थी, पहली बार घर के दरवाजों से बाहर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आली महिलाओं को देवसेना जैसे न्यौछावर, समर्पण भाव से अभूतपूर्व शक्ति प्राप्त हुई।

महानायक पर्णदत्त व चक्रपालित के माध्यम से 'स्कंदगुप्त' में राष्ट्रीय चेतना का विस्तार करने का प्रयास किया गया है।

सामाजिक समरसता व समाजवादी विचारधारा का प्रतिपादन ने भी राष्ट्रीय चेतना को नया रूप प्रदान किया।

हालाँकि कुछ सीमाएँ भी दिखायी पड़ती हैं जैसे कि राष्ट्रीय चेतना परोक्ष रूप से दिखती है न कि प्रत्यक्ष रूप में।
नाटक की तत्सम्बी प्रधान भाषा, पात्रों की अधिकता से तो यह ऐतिहासिक नाटक अधिक व स्वाधीनता संग्राम को ऊर्जा देने वाला कम दिखाई पड़ता है, और आनन्दवाद का समर्थक ज्यादा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

यदि राष्ट्रीय चेतना ही उद्देश्य होता है
भारतीय इतिहास के गौरवगान भी होता
और वर्तमान व भविष्य के लिए आत्म भावा
में जनमानस पर अधिक प्रभाव पड़ता लेकिन
यह विचारधारा या चेतना सुशिक्षित लोगों तक
ही सीमित रह गई।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की नायिका 'मल्लिका' के चरित्र पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
Please don't write anything in this space

मोहन राकेश द्वारा कृत 'आषाढ़ का एक दिन' 1958 ई. की रचना है जो आधुनिक भाव बोध व नवलेखन के दौर का नाटक है। इसमें भोगे हुए यथार्थ पर बल दिया गया है अतः 'आषाढ़ का एक दिन' सुगठित यथार्थवादी नाटक है जिसमें सत्ता व सृजनात्मकता का द्वन्द्व, प्रामाणिकता व अप्रामाणिकता आदि का विचार वर्णन अस्तित्ववाद की छाया में हुआ है।

इसकी नायिका 'मल्लिका' शुरुआत में प्रामाणिकता का परिचय देती है -

" मुझे अपने जीवन पर अधिकार है, मैं इसे नष्ट करना चाहूं तो भी किसी को मना करने का हक नहीं।" लेकिन बाद में उसका 'स्व', 'पर' में विलपित हो जाता है और उसका भी व्यक्तित्व अप्रामाणिक हो जाता है।

" मैं अपने आप में तुम्हें खोजती रही।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हालाँकि इन अप्रामाणिकता में मल्लिका ने कालिदास को कुछ हानि न पहुँचाई -
"मैं तुम्हें अपनी रेखाओं से घेरना नहीं चाहती।"

अतः मल्लिका का चरित्र, आदर्शवाद के हिसाब से भावनामूलक, आदर्शनिष्ठ पर आधारित है और वह छायावादी भावनाओं से प्रेरित दिखाई देती है जीवन की वास्तविकताओं को नकारते हुए। अंत में वेश्या बनना तो उसके एकाकिता पर और सवाल पैदा करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मोहन राकेश का लक्ष्य हिन्दी में मौलिक रंगमंच की स्थापना का था। अपने नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में वे अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति में कहाँ तक सफल हो सके हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश के समय हिन्दी नाटक रंगमंच संक्रमण काल से गुजर रहा था जहाँ एक ओर प्रसाद नाटक के लिए रंगमंच चाहते थे तो दूसरी ओर तकनीकी सुविधाओं की कमी की वजह से नाट्य मंचन करना पड़ा था।

इसी समस्या का समाधान मोहन राकेश ने आषाढ़ का एक दिन के माध्यम से सुझाया जहाँ न केवल सीमित संसाधनों बल्कि कम धन खर्च करके भी नाट्य मंचन को सफलता दिलाई। मंचन की सफलता में ही नाटक की सफलता विद्यमान है।

आषाढ़ का एक दिन में मात्र तीन अंक व एक पर्दे के माध्यम से पूरा मंचन किया जा सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पात्रों का आनुपातिक महत्व व अभिनय वर्गीकरण व बोल-बोल में संवादों का सटीक व चुस्त होना इसकी सफलता में चार चाँद लगाता है।

हालाँकि स्वगत एकालाप व गीतों की अधिकता मंचन के लिए समस्या हो सकती है किन्तु फिर भी आषाढ़ का एक दिन ने नाट्य मंचन के लिए मौलिक अवधारणा प्रस्तुत की है।

हिन्दी नाटक में मौलिक रंगमंच की स्थापना करने में मोहन राकेश सफल हुए क्योंकि आषाढ़ का एक दिन को कम समय व भारतीय संसाधनों के माध्यम से खेला जा सकता है। भाषा तत्सम प्रधान किंतु संप्रेषणीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण की उपयुक्तता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद के नाटक न तो वर्णनप्रधान, नही घटना प्रधान या स्थितिप्रधान होते हैं और नाटक चरित्रप्रधान होते हैं जैसे 'चंद्रगुप्त,' 'ध्रुव स्वामिनी' आदि।

स्कंदगुप्त के नामकरण में अगर स्कंदगुप्त के अलावा और संभावनाएं परखते तो पाते हैं कि कुछ एक चरित्रों को छोड़कर 'देवसेना' व घटनाओं (मालवा रक्षा) आदि को छोड़कर ज्यादा संभावनाएं नहीं है।

ऐतिहासिक नाटक होने के कारण प्रसाद ने जनमानस में प्रचलित नाम बेशक थोड़ा कम को इस नाटक के नामकरण के लिए उपयुक्त समझा और नाटक में अभिनेता की दृष्टि से स्कंदगुप्त अपने चरित्रों पर सही

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

ठहरता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भारत-दुर्दशा' नाटक की अभिनेयता पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतदुर्दशा को नाट्यरासक या लास्य रूपक नाटक माना गया है जिसमें छः ~~अंक~~ अंक, व लगभग 15 पात्र सम्मिलित हैं।
इसमें प्रथम दृश्य में 'वीथी', दूसरे में श्मशान घाट का दृश्य, तीसरे में युद्ध का मैदान, चौथे अंक में अंग्रेजी सज्जा वाला कमरा व मेज तथा अंतिम अंक में वन के मध्य का भाग है।
पात्रों के लिए वेशभूषा का निर्देशन भी पर्याप्त है व भाषा पात्रानुकूल है अतः ~~~~ भारत-दुर्दशा ~~की~~ अभिनेयता की दृष्टि से सफल नाटक है। ~~क्योंकि ज्यादा लेकिन~~
गीतों - गीतों की अधिकता व लम्बे एकालाप।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation